

## विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। -जैक वेल्स

## नकली उत्पाद उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा

आर्थिक सहयोग और विकास संघटन के ताजा आंकड़ों के अनुसार, नकली वस्तुओं का व्यापार विश्व स्तर पर प्रतिवर्ष 500 अरब डॉलर से अधिक का राजस्व उत्पन्न करता है। यह समस्या केवल वित्तीय पहलू तक ही सीमित नहीं है। नकली उत्पाद उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। मिलावटी दवाएं, विषैले पदार्थों से युक्त सौंदर्य प्रसाधन, सुरक्षा प्रमाणन के बिना इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और घटिया गुणवत्ता वाले वाहन पुर्जे कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो वास्तविक खतरों को दर्शाते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक विलासिता के सामान का बाजार लगातार परिष्कृत नकली उत्पादों से जूझ रहा है। लुईविटन, गुच्ची, नाइकी और एप्पल जैसे ब्रांड इसके प्रमुख निशाने पर हैं और बाजार में लगातार अधिक विश्वसनीय नकली उत्पाद पहुंच रहे हैं। दवा क्षेत्र को भी भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि नकली दवाओं में सक्रिय तत्व की कमी हो सकती है या उनमें हानिकारक पदार्थ मौजूद हो सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। नकली चार्जर, हेडफोन, स्मार्टवॉच और तकनीकी सहायक उपकरण न केवल कम टिकाऊ होते हैं, बल्कि पर्याप्त सुरक्षा मानकों के अभाव के कारण आग और बिजली के शटके जैसे दुर्घटनाओं का कारण भी बन सकते हैं।

देशभर में प्रतिदिन नकली और घटिया उत्पादों का न केवल भंडाफोड हो रहा है अपितु आये दिन लाखों करोड़ों का नकली सामान बरामद हो रहा है। लोगों को धरपकड़ भी लगातार हो रही है मगर इस नकली उत्पादों का आज तक प्रभावी रोक नहीं लग पायी है। बाजार में नकली उत्पादों की बिक्री से स्थानीय उत्पादकों के कारोबार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार नकली सामान देश के उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। इससे लाखों वैध रोजगार खत्म होने का खतरा है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। उद्योग मंडल ने कहा कि उद्योग को केवल सात क्षेत्र वाहन कल-पुर्जे, अल्कोहल युक्त पेय पदार्थ, कंप्यूटर हार्डवेयर, रोजमर्रा के उपयोग के डिब्बाबंद दवा तथा व्यक्तिगत उपयोग वाले सामान, सिगरेट तथा मोबाइल फोन से जुड़े उद्योग को भारी नुकसान होने का अनुमान है।

नकली सामान की समस्या से इस समय पूरी दुनिया जूझ रही है। एक अनुमान के मुताबिक, वैश्विक बाजार में नकली सामान की हिस्सेदारी 5 प्रतिशत तक है। भारत में हालात ज्यादा चिंताजनक हैं। देश में नकली उत्पादों का बाजार तेजी से बढ़ रहा है, यहां 30 प्रतिशत तक नकली माल बाजार में मिलता है। क्रिसिल मार्केट इंटरलिजेंस एंड एनालिटिक्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में नकली उत्पादों का मार्केट बहुत तेजी के साथ अपने पैर पसार रहा है। देश के 9 प्रमुख शहरों में किये गए एक सर्वे के अनुसार 2025 में 35 प्रतिशत शहरी उपभोक्ताओं ने नकली उत्पाद खरीदने की बात स्वीकार की है। इसके अलावा 89 प्रतिशत उपभोक्ताओं ने अपने जीवन में कम से कम एक बार नकली उत्पादों के शिकार कर चुके हैं। कपड़े का बाजार नकली उत्पादों का प्रमुख बाजार है।

दवाओं के मामले में भी चिंताजनक स्थिति है। नकली सामानों से घिरी इस दुनिया में, धोखाधड़ी से खुद को बचाना बेहद जरूरी हो जाता है। ऑनलाइन खरीदारी के प्रति सतर्क रहना अपना कर, उपभोक्ता जालसाजों से होने वाले खतरों को कम कर सकते हैं। विक्रेताओं पर शोध करना, उत्पाद समीक्षाओं की बारीकी से जांच करना और प्रामाणिकता की पुष्टि करना जैसी सरल रणनीतियाँ नकली सामानों की बाढ़ के खिलाफ सुरक्षा कवच का काम करती हैं। नकली सामान केवल लंगरी प्रोडक्ट्स तक सीमित नहीं है। घर की रसोई में रोजाना इस्तेमाल होने वाले जौरे से लेकर खाना पकाने के तेल और बच्चों की देखभाल के सामान से लेकर दवाओं तक नकली सामानों की घुसपैठ लगातार बढ़ती जा रही है। खाने-पीने की चीजें, पर्सनल केयर प्रोडक्ट हाउसहोल्ड केयर प्रोडक्ट, हेल्थ केयर ओवर द काउंटर प्रोडक्ट और स्टेशनरी आदि अपैरल यानी फैशन के कपड़ों और एप्लीकलचरल यानी बीज और खाद में सबसे ज्यादा नकली माल बाजार में मिलता है। फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल्स और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स जैसे परिया में नकली सामान का बाजार 20 से 25 प्रतिशत तक है। नकली सामान खुले बाजार बिक रहा है। मिलावटी या नकली खाने-पीने की चीजें, जीवन रक्षक दवाएं, कृषि उत्पाद, कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स और फूडसफ्लिमेट बेच कर जिंदगी से खेला जा रहा है। नकली इलेक्ट्रॉनिक सामान, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, गैजेट्स और फैशन की चीजों से कंज्यूमर ठगे जा रहे हैं। नकली सामानों की घुसपैठ और तस्करी पर रोक ना लगने से देश की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हो रहा है। केवल पांच प्रमुख सेक्टरों में ही नकली सामानों और स्मगलिंग की वजह से सरकार को सालाना 8 लाख करोड़ से अधिक का नुकसान हो रहा है।

इन सेक्टरों में, टेक्सटाइल एंड अपैरल, अल्कोहल और टोबैको शामिल हैं। नकली सामानों का ये अवैध ट्रेड सबसे ज्यादा सेक्टर को नुकसान पहुंचा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नकली सामान एक प्रमुख मुद्दा है, जिससे उपभोक्ताओं, व्यवसायों और सरकारों को बहुत ज्यादा जोखिम का सामना करना पड़ता है। इसमें नकली फैशन उत्पादों से लेकर नकली दवाइयों तक शामिल हो सकते हैं, जो उपभोक्ता की सुरक्षा को नुकसान पहुंचा सकते हैं, ब्रांड के परोसे को खत्म कर सकते हैं और भारी आर्थिक नुकसान पहुंचा सकते हैं। वास्तव में, के अनुसार कॉर्सर्व अनुमान वर्ष 3.3 में वैश्विक व्यापार में नकली वस्तुओं की हिस्सेदारी 2023 प्रतिशत होगी और वर्ष 5 तक आंकड़ा बढ़कर 2030 प्रतिशत हो जाने की उम्मीद है। यह एक बेहद चिंताजनक प्रवृत्ति है जो समस्या के पैमाने और तीव्र वृद्धि को दर्शाती है।

-अतिथि संपादक,  
बाल मुकुन्द ओझा,  
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

**राशिफल शनिवार 4 अप्रैल, 2026**

**वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2083, स्वाती नक्षत्र रात्रि 9:36 तक, हर्षण योग दिन 2:17 तक, गर करण दिन 10:09 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।**

**प्रस्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरु-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह**

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:36 तक है। भद्रा रात्रि 11:04 से आरम्भ होगा। आज इस्टर सेटर डे है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:51 से 9:29 तक, चर 12:30 से 2:03 तक, लाभ-अमृत 2:03 से 5:08 तक।

राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:19, सूर्यास्त 6:41

मेष	सिंह	धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित ख़त से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में सफल रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।
वृष	कन्या	मकर
विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	विवाहित मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।	व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।
मिथुन	तुला	कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरिपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों में योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे।
कर्क	वृश्चिक	मीन
परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। समग्र अनावश्यक खर्चा होगा। मन में असंतोष और धय बना रहेगा।	चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। आश्वय और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में तुलना बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

## जमीन बेचकर कब तक बंटेंगी पेंशन? नीतिगत भेदभाव ने विश्वविद्यालयों को कंगाल किया



डॉ. पी. सी. कंठालिया

राजस्थान जैसे कृषि प्रधान राज्य में यह स्थिति केवल विडंबना नहीं, बल्कि शासन की प्राथमिकताओं पर गंभीर प्रश्नचिह्न है। जिन वैज्ञानिकों और शिक्षकों ने प्रदेश की कृषि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया, वही आज अपने बुढ़ापे में पेंशन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। राज्य की लगभग 70 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है, और कृषि क्षेत्र अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है।

इसके बावजूद कृषि विश्वविद्यालयों के सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन समस्या वर्षों से उपेक्षित है। पिछले पाँच दशकों में राजस्थान ने कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। 1960 के दशक में जहाँ गेहूँ का उत्पादन लगभग 20 लाख टन था, वहीं आज यह 120 लाख टन से अधिक हो चुका है। सस्ती उत्पादन में राजस्थान देश में प्रथम स्थान

पर है, जबकि धनिया और ग्वार जैसी फसलों में भी राज्य अग्रणी है। इन उपलब्धियों के पीछे कृषि विश्वविद्यालयों की वैज्ञानिक शोध प्रणाली और विस्तार सेवाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन आज यही संस्थान अपने ही सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मानजनक जीवन देने में असमर्थ दिखाई देते हैं।

स्थिति को गंभीरता का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि उदयपुर स्थित महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को अपने पेंशन दायित्वों के निर्वहन के लिए अपनी बहुमूल्य अनुसंधान भूमि का एक हिस्सा बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। नगर विकास प्रयास को भूमि हस्तांतरित कर लगभग 190 करोड़ रुपये जुटाए गए, लेकिन यह राशि भी स्थायी समाधान साबित नहीं हुई। हर महीने करोड़ों रुपये को पेंशन देनदारी के सामने संसाधन तेजी से समाप्त हो रहे हैं। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में पेंशनरों की लगभग 22 महीनों की पेंशन बकाया बताई जाती है। महंगाई भत्ता 58 प्रतिशत के स्थान पर मात्र 12 प्रतिशत दिया जा रहा है, वह भी उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद। स्थिति और भी गंभीर है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में महंगाई भत्ता 58 प्रतिशत की स्वीकृत दर के अनुसार नहीं दिया जा रहा है। यह स्थिति केवल वित्तीय संकट ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक संवेदनहीनता का भी संकेत

है। इसके अतिरिक्त सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन भुगतान में देरी, सतत वित्तमामन के परिचर का लंबित रहना, स्वीकृत दर के अनुसार महंगाई भत्ता न मिलना, 70 एवं 75 वर्ष की आयु पर अतिरिक्त पेंशन का लाभ न मिलना तथा कम्प्यूटेड पेंशन पर रोक जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है। कृषि विश्वविद्यालयों की संरचना ही ऐसी है कि उनके पास आय के सीमित स्रोत होते हैं।

पारंपरिक विश्वविद्यालयों की तरह उन्हें परीक्षा शुल्क, संबद्धता शुल्क या बड़े पैमाने पर शिक्षण शुल्क से आय प्राप्त नहीं होती। उदाहरण के लिए, बीकानेर स्थित कृषि विश्वविद्यालय में लगभग 500 छात्र हैं, जबकि वहाँ 500 से अधिक कर्मचारी और लगभग 1200 पेंशनर हैं। पेंशन पर वार्षिक व्यय लगभग 60 करोड़ रुपये है, जिसे केवल शुल्क आय से वहन करना व्यावहारिक रूप से असंभव है। उदयपुर स्थित कृषि विश्वविद्यालय में ही 1300 से अधिक पेंशनर हैं, जिन पर प्रति माह लगभग 6 से 6.5 करोड़ रुपये का व्यय आता है। इस प्रकार वार्षिक पेंशन भार 70 से 75 करोड़ रुपये तक पहुँच जाता है। यदि पूरे राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों को मिलाकर देखा जाए, तो 3000 से अधिक पेंशनरों पर प्रतिवर्ष लगभग 200 करोड़ रुपये का व्यय अनुमानित है।

राजस्थान सरकार का 2026-27 का बजट लगभग 3.5 लाख करोड़ रुपये है। इस दृष्टि से कृषि विश्वविद्यालयों के पेंशनरों पर आने

वाला 200 करोड़ रुपये का भार कुल बजट के मात्र 0.06 प्रतिशत है। राज्य सरकार ने अपने कर्मचारियों के पेंशन और सेवानिवृत्त लाभों के लिए 28,400 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। ऐसे में 200 करोड़ रुपये की अतिरिक्त व्यवस्था करना कोई असंभव कार्य नहीं है। यह स्पष्ट है कि समस्या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि प्राथमिकताओं के निर्धारण की है।

समस्या की जड़ नीतिगत असमानता और वित्तीय ढांचे की खामियों में निहित है। जहाँ अन्य सरकारी निकायों के कर्मचारियों की पेंशन को जिम्मेदारी राज्य सरकार ने अपने कंधर ले ली, वहीं विश्वविद्यालय कर्मचारियों को उनके सीमित पेंशन फंड के परोसे छोड़ दिया गया, जो 2010 के आसपास लगभग समाप्त हो चुका था। अन्य राज्यों-जैसे गुजरात, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश-में विश्वविद्यालय कर्मचारियों को पेंशन का भुगतान राज्य सरकार द्वारा नियमित रूप से किया जाता है। इसके विपरीत राजस्थान में यह जिम्मेदारी संस्थानों पर डाल दी गई है, जिनकी वित्तीय क्षमता अत्यंत सीमित है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि समाधान संभव है, यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति हो।

पेंशन कोई अग्रह नहीं, बल्कि कर्मचारियों का अर्जित अधिकार है। यह उनके 30-35 वर्षों की सेवा और योगदान का प्रतिफल है। जिन्होंने अपना पूरा जीवन कृषि उन्नति और शिक्षा के लिए समर्पित किया, उन्हें जीवन के

अंतिम चरण में आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़े, यह न केवल अन्याय है बल्कि समाज की संवेदनशीलता पर भी प्रश्नचिह्न है। अब समय आ गया है कि राज्य सरकार इस मुद्दे को केवल वित्तीय बोझ के रूप में न देखकर सामाजिक और नैतिक दायित्व के रूप में देखे। विश्वविद्यालय कर्मचारियों को पेंशन व्यवस्था को राज्य कोष से सुनिश्चित किया जाए तथा विश्वविद्यालय पेंशन नियम, 1990 में आवश्यक संशोधन कर इसे अन्य सरकारी कर्मचारियों के समान बनाया जाए। किसी भी संस्थान की साख उसकी इमारतों या बजट से नहीं, बल्कि उन लोगों के सम्मान से बनती है जिन्होंने उसे खड़ा किया। यदि वही लोग अपने जीवन के अंतिम चरण में उपेक्षा का शिकार हों, तो यह केवल संस्थान की नहीं, बल्कि पूरे समाज की नैतिक पराजय है।

अंततः यह प्रश्न केवल पेंशन का नहीं, बल्कि उस दृष्टिकोण का है कि जिससे हम अपने ज्ञान निर्माताओं और कृषि विकास के आधार स्तंभों को देखते हैं। राज्य सरकार को निर्णय लेना होगा कि वह अपने वैज्ञानिकों को असुरक्षा में छोड़ना चाहती है या उनके सम्मान और अधिकारों की रक्षा कर एक जिम्मेदार शासन का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती है।

-डॉ. पी. सी. कंठालिया,  
पूर्व प्रोफेसर एवं उपाध्यक्ष  
महाराणा प्रताप कृषि एवं  
प्रौद्योगिकी वि.वि. पेंशनर्स  
वेलफेयर सोसायटी, उदयपुर

## शिक्षा या सौदा? बाजारीकरण और लुप्त होती गुरु-शिष्य परम्परा



प्रोफेसर अशोक कुमार

नारायण मूर्ति ने एक बार कहा था कि "संस्थान ईंट और गारे से नहीं, बल्कि वहां के मूल्यों से बनती हैं।" लेकिन आज के आधुनिक भारत में, महानगरीय शहरों के वातानुकूलित क्लासरूम में, ये मूल्य धीरे-धीरे फीस की रसोई के नीचे दबते जा रहे हैं। जब एक शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है, तो उसके सामने बैठे छात्र अब जिज्ञासु शिष्य कम और जागरूक ग्राहक अधिक नज़र आते हैं। यह बदलाव रॉटों-रॉटों नहीं आया, बल्कि इसके पीछे सामाजिक ताने-बाने का वह बिखराव है जहाँ गुरु को एक सर्विस प्रदाता और शिक्षा को एक खरीदे जा सकने वाले उत्पाद के रूप में देखा जाने लगा है।

जब एक अभिभावक शिक्षक यह कहता है कि "मेरे बच्चे की फीस से आपका घर चलता है," तो वह केवल एक शिक्षक का अपमान नहीं करता, बल्कि वह अपने ही बच्चे के भविष्य से उस नैतिक अधिभार को छीन लेता है जो उसे एक बेहतर इंसान बना सकता था। शिक्षा का बाजारीकरण और छात्रों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला

हुमिलिएशन (अपमान) का कार्ड आज के शिक्षकों को एक ऐसे रक्षालतक मोड़ में ले आया है, जहाँ वे विरिधियों से ब्यादा खुद को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। यह केवल एक शिक्षक की पीड़ा नहीं है, बल्कि उस मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संकट का आईना है, जिसे प्रति आज नहीं सुधारा गया, तो हम डिग्री धारक रबोट्स तो पैदा कर लेंगे, लेकिन चरित्रवान नागरिक छो देंगे।

यह विषय आज के शैक्षणिक परिदृश्य की एक ऐसी दुखती रग है, जिस पर चर्चा करना अनिवार्य हो गया है। नोएडा के उस शिक्षक का अनुभव केवल एक व्यक्ति की व्यथा नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के नैतिक पतन का संकेत है। जब शिक्षा को ज्ञान के बजाय उत्पाद और छात्र को शिष्य के बजाय ग्राहक मान लिया जाता है, तो गुरु-शिष्य परंपरा की नींव हिलने लगती है। आइए, इस जटिल सामाजिक और मनोवैज्ञानिक ताने-बाने को विस्तार से समझते हैं। अभिभावकों का यह तर्क कि "शिक्षकों को वेतन हमारे बच्चों की फीस से मिलता है," शिक्षा के मॉडल को एक व्यावसायिक शोरूम में बदल देता है। यह सोच न केवल संकुचित है, बल्कि धातक भी है।

उपभोक्तावादी मानसिकता जब अभिभावक शिक्षा को एक खरीदी गई सेवा मानते हैं, तो वे अनजाने में अपने बच्चे को यह सिखा रहे होते हैं कि पैसा सम्मान से ऊपर है। यदि बच्चा घर पर यह सुनता है कि "हम शिक्षक को पैसे देते हैं," तो वह कक्षा में शिक्षक को एक मार्गदर्शक के रूप में नहीं, बल्कि एक कर्मचारी के रूप में देखता है। मनोविज्ञान कहता है

कि बच्चा उस व्यक्ति से कभी नहीं सीख सकता जिसका वह सम्मान नहीं करता। 2. सूरक्षात्मक अतिशयोक्ति आज के दौर में हेलीकॉप्टर पैरेंटिंग का चलन बढ़ा है। अभिभावक अपने बच्चे की हर गलती का बचाव करते हैं। जब शिक्षक बच्चे को सुधारने के लिए टोकता है, तो अभिभावक इसे बच्चे का अपमान समझकर शुकल पहुँच जाते हैं। इससे बच्चे के मन में यह धारणा बैठ जाती है कि वह अजेय है और कोई उसे उसकी गलती का अहसास नहीं करा सकता। अक्सर छात्र यह शिकायत करते हैं कि सवाल पूछने पर या गलती करने पर उन्हें हुमिलिएट (अपमानित) किया गया। यहाँ हमें बारीक अंतर समझने की जरूरत है।

अनुशासन बनाम अपमान: एक शिक्षक का काम केवल तथ्य पढ़ाना नहीं, बल्कि व्यवहार सुधारना भी है। यदि सुधार की प्रक्रिया को छात्र अपमान का नाम देने लगें, तो शिक्षक सुरक्षित खेलने लगता है। वह पढ़ाकर निकल जाता है, छात्र के चरित्र निर्माण से खुद को अलग कर लेता है। सहनशीलता में कमी: आधुनिक मनोवैज्ञानिक परिवेश में छात्रों की इमोशनल रेजिलिएंस (भावनात्मक लचीलापन) कम हुई है। वे हल्की सी आलोचना भी सहन नहीं कर पाते। इसे स्नोफ्लेक जनरेशन का प्रभाव भी कहा जाता है, जहाँ बच्चा खुद को बहुत नाजुक समझने लगता है।

आज का शिक्षक एक ऐसी दोधारी तलवार पर चला रहा है जहाँ एक तरफ उसे पाठ्यक्रम पूरा करना है और दूसरी तरफ अपनी नौकरी और प्रतिष्ठा बचानी है। ऐसे में शिक्षक क्या करे?

1. सत्ता से नहीं, व्यक्तिव

से प्रभाव अब वह समय चला गया जब शिक्षक डंडे के जोर पर सम्मान पाते थे। आज के शिक्षक को इमोशनल इंटेलिजेंस (इआइ) का सहारा लेना होगा। छात्र के साथ एक कनेक्ट स्थापित करना होगा। जब छात्र को लगता है कि शिक्षक वास्तव में उसका भला चाहता है, तो वह टोकने पर बुरा नहीं मानता।

2. स्पष्ट संवाद की नीति शिक्षक को कक्षा के नियम पहले दिन ही स्पष्ट करने चाहिए। अनुशासन को सजा के रूप में नहीं, बल्कि सीखने के माहौल के रूप में देखा करना चाहिए। सवाल पूछने पर यदि बच्चा झिझकता है, तो शिक्षक को एक सुरक्षित वातावरण बनाना होगा जहाँ गलत जवाब पर कोई हंसे नहीं। शिक्षा केवल स्कूल की जिम्मेदारी नहीं है। एक बच्चे का व्यक्तित्व त्रिकोणीय सहयोग पर टिका है: शिक्षक, छात्र और अभिभावक। अभिभावक का दायित्व प्रभाव, शिक्षक का सम्मान करना, बच्चा घर के माहौल से ही दूसरों का आदर करना सीखता है। गलती को स्वीकारना। बच्चे को सिखाएं कि गलती करना बुरा नहीं है, उसे सुधारना जरूरी है। स्कूल को पार्टनर मानना। स्कूल को सर्विस प्रोवाइडर के बजाय पार्टनर समझें। फीस और सम्मान को अलग रखना। पैसा शिक्षा की सुविधा के लिए है, गुरु की गरिमा खरीदने के लिए नहीं।

आज के इस संक्रमण काल में हमें एक नए सोशल कॉन्ट्रैक्ट की जरूरत है: स्कूल प्रशासन की भूमिका: मैनेजमेंट को केवल बिजनेस नहीं देखना चाहिए। यदि शिक्षक सही है, तो प्रशासन को उसके पीछे चढ़ाने की तरह खड़ा होना चाहिए। जब छात्र देखता है

कि स्कूल मैनेजमेंट शिक्षक के साथ है, तो उसकी उम्मीद खलता कम होती है। काउंसिलिंग सत्र: हर स्कूल में न केवल छात्रों के लिए, बल्कि अभिभावकों के लिए भी कार्यशालाएं होनी चाहिए, जहाँ उन्हें बताया जाए कि "अत्यधिक सुरक्षा उनके बच्चे के भविष्य को अंग बना रही है।" शिक्षक का सशक्तिकरण: शिक्षकों को आधुनिक तकनीक और कॉम्प्लेक्स मैनेजमेंट (विवाद प्रबंधन) की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए ताकि वे आक्रामक छात्रों या अभिभावकों को शालीनता और दृढ़ता से संभाल सकें।

निष्कर्ष: आगे का रास्ता शिक्षा कोई वस्तु नहीं है जिसे बाजार से खरीदा जा सके। यह एक संस्कार है जिसे केवल विनम्रता से ग्रहण किया जा सकता है। यदि अभिभावक अपनी फीस के अहंकार में शिक्षक को छोटा समझेंगे, तो अंततः नुकसान उनके बच्चे का ही होगा, क्योंकि वह एक डिग्री तो पा लेगा, लेकिन संस्कार और चरित्र से शून्य रह जाएगा। शिक्षक को अपनी गरिमा वापस पाने के लिए खुद को बदलना होगा, और समाज को अपनी मानसिकता गुरु का स्थान पर्यार को लकीर न सही, लेकिन मार्गदर्शक की मशाल तो जरूर होना चाहिए।

"जिस समाज में शिक्षक भयभीत है और छात्र अनुशासनहीन, उस समाज का पतन निश्चित है। सुधार की शुरुआत घर के ड्राइंग रूम से होनी चाहिए, जहाँ शिक्षक के बारे में होने वाली चर्चा सम्मानजनक हो।"

-प्रोफेसर अशोक कुमार,  
पूर्व कुलपति कानपुर,  
गोरखपुर विश्वविद्यालय

## हाईकोर्ट ने तलाकशुदा पत्नी को मिलने वाला गुजारा भत्ता 25 लाख से बढ़ाकर 40 लाख रु. किया

राजस्थान हाईकोर्ट ने माना कि पत्नी 16 साल से अकेले ही बच्चों का पालन-पोषण कर रही है, महिला के पास न आय है, न अपना घर है

जोधपुर, (कासं)। हाईकोर्ट की जोधपुर मुख्यपीठ ने तलाकशुदा पत्नी को मिलने वाले स्थायी गुजारा भत्ते को 25 लाख से बढ़ाकर 40 लाख रुपए कर दिया है। जस्टिस अरुण मोंगा और जस्टिस योगेंद्र कुमार पुरोहित की खंडपीठ ने यह फैसला सुनाया। कोर्ट ने माना कि पत्नी 16 सालों से अकेले बच्चों का पालन-पोषण कर रही है। महिला के पास न आय है, न अपना घर है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जब पति एक सरकारी डॉक्टर है, तो फैमिली कोर्ट का 25 लाख रुपए का पुराना फैसला न्यायोचित नहीं था। कोर्ट ने कहा कि गुजारा भत्ता अमीरी का जरिया नहीं है, बल्कि सम्मान का अधिकार है।

यह मामला जोधपुर निवासी शोभा कंव्वर और डॉ. नरपतिसिंह के बीच चल रहे विवाद का है। दोनों की शादी 23 अप्रैल 1994 को मारावाड़

जंक्शन में हिंदू रीति-रिवाज से हुई थी। इनके 2 बेटे हैं। पत्नी ने 2 मार्च 2015 को फैमिली कोर्ट में तलाक की याचिका दायर की थी। पत्नी का आरोप है कि 2004 में पति और उसके परिवार पर पिता का मकान और जमीन बेचकर पैसे लाने का दबाव बनाया। इनकार करने पर 1 मई 2009 को पीटा गया और बच्चों सहित घर से निकाल दिया गया। इस मामले में देहेज प्रताड़ना, आचार्यक विश्वासघात, मारपीट और चड्यंत्र के तहत एफआईआर भी दर्ज है। फैमिली कोर्ट, जोधपुर ने तलाक की डिक्ली जारी करते हुए पति को पत्नी को 25 लाख रुपए देने का आदेश दिया था और भुगतान होने तक 45 हजार रुपए प्रति माह देने के लिए कहा था। पत्नी ने इस राशि को अपर्याप्त मानते हुए 2 करोड़ रुपये की मांग की, जबकि पति ने इसे अत्यधिक बताते हुए हाईकोर्ट में चुनौती दी।

कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जब पति एक सरकारी डॉक्टर है, तो फैमिली कोर्ट का 25 लाख रुपए का पुराना फैसला न्यायोचित नहीं था, कोर्ट ने कहा कि गुजारा भत्ता अमीरी का जरिया नहीं है, बल्कि सम्मान का अधिकार है

यह मामला जोधपुर निवासी शोभा कंव्वर और डॉ. नरपतिसिंह के बीच चल रहे विवाद का है

महिला के वकील ने पैरवी करते हुए बताया कि पति ईएनटी विशेषज्ञ और सरकारी अस्पताल वाली में वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी हैं। वेतन के अलावा निजी प्रैक्टिस, अंतर्राष्ट्रीय फिटनेस सर्टिफिकेट और मेडिकल एजेंसी से मिलकर उनकी 8-10 लाख रुपए मासिक आय है। पत्नी के पास आय का कोई साधन नहीं है। वह 16 साल से बच्चों को अकेले पाल रही है। वहीं, पति की ओर से वकील

ने तर्क दिया कि पत्नी बीए, एलएलबी, एलएलएम और पीएचडी योग्यताधारी वकील है। 50 हजार रुपए मंथली कमाती है। पति की बूढ़ी मां बीमार है और विकलांग भाई इंजीनियरिंग कॉलेज में कार्यरत है। ऐसे में पति पर ही पूरे परिवार की जिम्मेदारी है।

दोनों पक्षों को दलीलें सुनकर खंडपीठ ने माना कि विवाद लगभग

15 साल तक चला और पत्नी 16 वर्षों से बच्चों को अकेले पाल रही है। कोर्ट ने पाया कि पति का वेतन लगभग 2 लाख रुपए मासिक प्रमाणात है। उसके पास स्वअर्जित मकान और पैरुत कर्ज है। इसके विपरीत, पत्नी के पास कोई स्वतंत्र आवास नहीं है। कोर्ट ने माना कि पत्नी की निजी प्रैक्टिस संबंधी आय के दस्तावेज 2011 से पुराने हैं और उसकी वर्तमान आय साबित नहीं होती है। साथ ही, कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि पत्नी को दो करोड़ की मांग अत्यधिक और असमर्थित है, क्योंकि गुजारा भत्ता समृद्धि का जरिया नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने का माध्यम है। कोर्ट ने पत्नी की अपील स्वीकार और पति को अपील खारिज करते हुए स्थायी गुजारा भत्ता 25 लाख से बढ़ाकर 40 लाख रुपए कर दिया है।